INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

VOLUME 2, ISSUE ,9 September, 2014

ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

संस्कृत वाङ्गमय में शिक्षा एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता

डॉ. बनवारी लाल शर्मा

एम.एससी.(रसायन),एम.ए.(इतिहास),एम.एड.(शिक्षा),

पीएचडी(शिक्षा)

भारतीय संस्कृति और सभ्यता का मुख्य आधार आदिकाल से मूलभाषा के रूप में संस्कृत भाषा का बोलबाला रहा है। भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन के वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी अंगों में संगठन एवं सामंजस्य स्थापित करने के लिए उसके पोषण तथा परिष्करण के लिए जो पद्धति एवं संस्कार प्रक्रिया तथा जीवन की अभीष्टतम उपलब्धि निर्धारित की वही भारतीय संस्कृति है और उसका मुख्य वाहन संस्कृत है।समाज के शरीर को उसकी संस्कृति ही चेतना तथा प्राणवत्ता प्रदान करती है। उसकी अभिव्यक्ति सक्षम भाषा संस्कृत के माध्यम से कला और साहित्य में होती है। जिस साहित्य, कला और शिल्प में संस्कृति की जितनी अधिक छाप होगी वह उतनी ही जीवन्त तथा चिर स्थायी होगा। संस्कृत, संस्कार और संस्कृति एक ही धातु 'कृ' करने अर्थ से बने हैं। संस्कार वाह्य पल्लव है, संस्कृत भाषा वृक्ष में प्रवाहित होने वाली उसकी चेतना है तथा संस्कृति वृक्ष की जड़ है।

अंग्रेजों ने जब भारत पर अधिकार किया तो बहुत समय तक उन्होने भारतीय शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया। भारत की पाठशालाएँ एवं मकतब भी अर्थाभाव के कारण धीरे–धीरे समाप्त हो गये। यदि अंग्रेजी सरकार परम्परागत पद्धति को उचित सहायता प्रदान करके उसका विकास करने का प्रयत्न करती तो संस्कृत शिक्षा की इतनी दुर्दशा नहीं होती जितनी आज है। आज जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित है वह पूर्ण रूपेण अंग्रेजी सरकार की देन है। आज की शिक्षा पूर्व प्रारम्भिक, प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में विभक्त है।

Please cite this Article as: डॉ. बनवारी लाल शर्मा,,संस्कृत वाङ्गमय में शिक्षा एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.9, September, 2014

यह शिक्षा भारतीय जन–जीवन से पृथक है और आजकल के विद्यालयों में पढ़ने वाला विद्यार्थी सबसे पहले भारतीयता से घृणा करना प्रारम्भ कर देता है। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की अनेक संस्थाएँ स्थापित हुईं किन्तु प्राचीन शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर देने के कारण निरक्षरता बढ़ती ही गई और कुछ ही व्यक्ति शिक्षा पाने में समर्थ हुए।

संस्कृत शिक्षा मानव मस्तिष्क को अनेक कुप्रवृत्तियों से बचाती हुई उसमें जनकल्याण की भावना का संचार करती है। शिक्षा व्यक्ति के संस्कारों को शुद्ध करती हुई उसके रहन–सहन, बोलचाल तथा व्यवहार पर अपना अमिट प्रभाव डालती है। शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है अन्यथा वह साक्षात् पशु है जो केवल काम करना या पेट भरना जानता है। कहा गया है –

'साहित्य–संगीत–कला–विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छ–विषाण–हीनः'

साहित्य, संगीत, कला आदि शिक्षा के अंग हैं। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का विकास करता है।

पर बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि वर्तमान भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल उदर पूर्ति है। यदि शिक्षित व्यक्ति पेट भरना ही सीखता है तो फिर शिक्षित अशिक्षित में अन्तर ही क्या है? यदि शिक्षा का उद्देश्य केवल धन कमाना है, तो शिक्षित वर्ग पशुओं के अधिक निकट हो जायेगा। इसीलिए आज जो सहृदयता, दया, स्नेह, श्रद्धा, ममता, सहानुभूति कुछ अशिक्षितों में है वह कतिपय शिक्षितों में दुर्लभ है। आज का शिक्षित व्यक्ति स्वार्थपरकता के अंधकार में इस तरह घिरा है कि उसका दम घुट रहा है पर उसकी बुद्धि में स्वार्थ ही स्वार्थ है।

वर्तमान समय में संस्कृत साहित्य एवं शिक्षा की उपादेयता – शिक्षा को भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के मूल तत्वों पर आधारित होना चाहिए। संस्कृत साहित्य एवं शिक्षा की उपादेयता वर्तमान समय में निम्न रूप में आवश्यक हो सकती है –

1. **अध्यात्मवाद** – संस्कृत साहित्य ही इस परिकल्पना को विकसित करने में सक्षम है कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्मानुभूति है।
2. **कर्मवाद**– भारतीय दर्शन की लगभग सभी शाखाएँ कर्मनियम को मानती हैं जो कि संस्कृत साहित्य में वर्णित है।

3. ईश्वरवाद – ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करना शिक्षा का एक लक्ष्य होना चाहिए। इस कार्य में देववाणी अधिक सक्षम हो सकती है।

4. आशावाद – प्राचीन भारतीय नाटक दुःखान्त नही लिखे गये है, जबकि पाश्चात्य साहित्य में दुःखान्त नाटको की भरमार है।

5. अनेकता में एकता– 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'। अतः भारत के विभिन्न मतो में एकता के दर्शन करने की प्रेरणा छात्रों को मिलनी चाहिए।

6. व्यावहारिकता – भारतीय दर्शन या संस्कृत साहित्य में दार्शनिक सिद्धान्तों को आचरण में उतारने के विभिन्न उत्तम उदाहरण मिलते है।

7. नैतिक व्यवस्था में विश्वास– आज छात्रों के मन में नैतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास उत्पन्न करना हम सबका दायित्व है। यह तत्व भारतीय संस्कृत साहित्य का मूल तत्त्व है।

8. सांसारिक कार्यों में रूचि– इस संसार के कार्य–व्यापार द्वारा ही नैतिक नियमों का प्रकटीकरण होता है। इसमें रूचि रखकर ही हम नैतिकता का अभ्यास कर सकते हैं। ऐसा भारती दर्शन एवं साहित्य में वर्णित है।

9. अज्ञान से निवृत्ति एवं ज्ञान प्रवृत्ति– **'सा विद्या या विमुक्तये'** कहकर शिक्षा में मोक्ष तत्वों को स्वीकार किया गया है। अज्ञान से बंधन है, अतः अज्ञान से मुक्ति पाकर, ज्ञान में प्रवृत्त होना चाहिए।

10. चिन्तन–मनन– **'आत्मा वा अरे दृष्टव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यश्च'** कहकर उपनिषदों ने मनन के महत्त्व को स्वीकार किया है।

11. आत्मानुशासन– इन्द्रिय–निग्रह, यम, नियम, संयम, प्राणायाम आदि के द्वारा मन पर नियंत्रण पाया जा सकता है। ये सभी संस्कृति एवं संस्कृत साहित्य के तत्त्व हैं।

12. सामाजिक सम्बन्ध– भारतीय संस्कृति में पिता–पुत्र, भाई–भाई, भाई–बहिन, माता–पिता, पति–पत्नि, गुरू–शिष्य के संबंधों की व्याख्या सुलभ रूप में की गयी है।

13. राष्ट्रीय भावना– राष्ट्रीय भावना के विषय में भारतीय साहित्य में अनेकशः वर्णन विद्यमान हैं। शिक्षा में इनका उपयोग होना चाहिए।

14. अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना– **'वसुधैवकुटुम्बकम्'** इस शब्द से पता चलता है कि भारतीय साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीयता के प्रति कितनी उच्चतम स्तर की भावना प्रकट की गयी है।

15. संस्कृत भाषा व साहित्य का अध्ययन – भारत में सभी दर्शन, सभी सम्प्रदाय एवं सभी विचारधाराओं ने संस्कृत के प्रति आदर प्रकट किया है। अतः इसका अध्ययन भारतीय शिक्षालयों में होना आवश्यक ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ–

-1 रामनरेश त्यागी: भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं ।

-2 डॉ श्रीधर मुखोपाध्याय: भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ 41,42,43,।

-3 *Santosh Kumar Das: The Education System of the Ancient Hindus, p.38,39.*

-4 Dr.A.S.Altekar: Education in Ancient India,P.8,9.